'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १४ } वाराणसी, शनिवार, ३१ जनवरी, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना प्रवचन

पडाव : सीमल वाडा 'राजस्थान' १५ जनवरी ५९

राजस्थान 'वीरभूमि' का नाम सार्थक करें

[आज राजस्थान की यात्रा प्रारंभ हुई। स्वागत समारोह का उत्तर देते हुए राजस्थानवासी लोगों को विनोबाजी ने जो प्रथम संदेश दिया, वह यहाँ दिया जा रहा है।—सं०]

बहुत खुशी की बात है कि राजस्थान में भूदान यात्रा का यह दुबारा प्रवेश हो रहा है। बहुतों को इसका ख्याल नहीं होगा कि यह दुबारा प्रवेश हो रहा है। क्योंकि राजस्थान बहुत बड़ा प्रदेश है इसलिए इस कोने के लोगों को उस कोने का पता भी नहीं होता होगा। जब मैं भूदान-यज्ञ का संदेश पहुँचाते हुए पैदल वर्धा से दिल्ली जा रहा था, तब बीच में धोलपुर का एक हिस्सा हमारी यात्रा में आया था। इसलिए जब कभी राजस्थानवाले पूछते कि "राजस्थान कब आना होगा ?" तब मैं कहता था कि अब तो राजस्थान में दुबारा आने की बात है।

राजस्थान अब नये सिरे से एक बड़ा ही सुंदर प्रदेश बना है, इसमें शंका नहीं है। इतिहास में जोधपुर, जयपुर व उदयपुर का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। आज तीनों एक हो गये हैं, तो तीनों के अनेक गुण आये होंगे। मैं चाहता हूँ कि नक्शे में यह जो एकता बनी है वह हार्दिक बने। अभी वह नहीं बन रही है, पर वह बनानी चाहिए। इतिहासकाल में जो घटनाएँ घटी हैं, उनमें से अच्छी घटनाओं का संग्रह करिये और जो भूलने लायक हैं, उन्हें छोड़ दीजिये, भूल जाइये।

कुल राजस्थान एक है, ऐसी भावना से राजस्थान काम करने लगे, यह मेरे मनकी कामना है। इस यात्रा से अगर यह एक लाभ हो, दिली-एकता हो तो 'वीरभूमि' का विशेषण सार्थक माना जायेगा। राज्य तो एक हो गये हैं, अब दूसरी तरह से—दिली-एकता हो जाय। मैं मानता हूँ कि दिल के अंतस्तल में यह बात पड़ी है। मतभेद तो ऊपरी स्तर में होते हैं। मैं आशा करूँगा कि ग्रामदान आदि कार्य में, जहाँ सबके विचार एक हुए हैं, सारा राजस्थान एक होगा। अगर ऐसा हो सका तो मैं सब ग्रामदान पा चुका। सारा राजस्थान एक चित्त बनेगा तो मेरा काम हो गया। इस चीज की बहुत बड़ी जरूरत है। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह कार्य भी संपन्न होने में इस यात्रा से मदद मिले।

राजस्थान 'वीरभूमि' है। कल ही मैं अपने मित्र को पत्र लिख रहा था कि अब कल 'वीरभूमि' राजस्थान में मेरा प्रवेश होगा! यह संतों की भूमि भी है। परन्तु सन्तों की भूमि तो यह सारा भारत है। यह सही है कि हर प्रान्त की अलग-अलग खूबी होती है। राजस्थान की विशेषता यह है कि यह संतों की भूमि के अलावा 'वीरभूमि' भी है। उसी दृष्टि से राजस्थान की ओर सारा भारत देख रहा है।

शांति सेना की माँग

वीरों की भूमि से मैं क्या चाहूँगा ? मेरी सर्वप्रथम इच्छा यही है कि राजस्थान में मेरी शांति-सेना की जो माँग है, वह पूरी संख्या में और पूरी योग्यता में पूरी होनी चाहिए। मेरी यह माँग बहुत बड़ी नहीं है। पाँच हजार लोगों की निरंतर सेवा के लिए एक सेवक मिले, वह निरंतर सेवा करे और खास मौके पर अपनी जान को भी खतरे में डालकर सेवा करे। ऐसे शांति सैनिक यहाँ खड़े होने चाहिए। इस हिसाब से तीन हजार शान्ति सैनिक राजस्थान की इस 'वीरभूमि' से मिलें। वैसे मेरी यह माँग यहाँ के भाई पहले से ही जानते हैं। मेरा हिसाब भी जानते हैं। परंतु जब मैंने यह माँग पेश की तब हमारे यहाँ के मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि 'यह माँग ज्यादा नहीं है।' उनके इस आश्वासन में मैंने बहुत पाया।

मैंने ७॥ साल से यह काम शुरू किया है। तब से लोगों ने भूदान, संपत्तिदान, ग्रामदान आदि पर बहुत आक्षेप किये हैं। एक आक्षेप यह भी है कि यह एक 'हवाई माँग' है। परन्तु 'शांतिसेना' के विचार को किसीने 'हवाई' नहीं कहा है। सब तरह के विचार करनेवालों को लगता है कि वह जमीन की बात है। यहाँ के व्यवहारी नेता इसे कबूल करते हैं तो मेरा काम हो ही गया। आप पूछेंगे कि यह माँग सर्वप्रथम क्यों ? क्या ग्रामदान नहीं चाहिए ? क्या वह विचार पिछड़ा है ? नहीं, ऐसा नहीं। ग्रामदान की माँग तो है ही। इसलिए ग्रामदान का काम आप कर ही रहे हैं और बिना माँगे दान भी दे रहे हैं। आज आपने काफी संख्या में (५५ ग्रामदान) दिये हैं। ग्रामदान की इस तरह की घोषणा हमारे प्रवेश के दिन उडीसा ने भी की थी। वैसा ही यहाँ भी हुआ है। कोई वजह नहीं है कि जैसे ग्रामदान का काम वहाँ हो रहा है और हुआ है, वैसे यहाँ न हो।

www.vinoba.in

चार-पाँच स्थान ऐसे हों जहाँ ग्रामदान की बुनियाद पर ग्राम-स्वराज्य का मकान खड़ा कर सकें।

ग्रामदान और ग्रामस्वराज्य का संदेश गाँव-गाँव में, कोने-कोने में पहुँचाना, ग्रामदान प्राप्त करना, ग्रामदान की प्राप्ति के बाद वहाँ एकता की भावना फैलाना—यह सारा काम कौन करेगा? ऐसे कामों का दारोमदार चेतन पर होना चाहिए। चेतन शांति-सैनिक है। शांति-सैनिक मिलेगा तो काम हो जायेगा।

कितने थोड़े कार्यकर्ता?

एक भाई ने कहा कि "आपने शांति-सेना का नया विचार कार्यकर्ताओं के सामने रखा। इस तरह नये-नये विचार आप कार्यकर्ताओं के सामने रखते हैं और पुराने छोड़ते जाते हैं। पहले भूदान का काम रखा, अब शांति-सेना का। कार्यकर्ता क्या करें? वह पुराना काम छोड़कर नया-नया काम करता जाय?" मैं पूछता हूँ कि कार्यकर्ता हैं कौन? कार्यकर्ता तो हमारे पास हैं ही नहीं। सारे भारत में कितने कार्यकर्ता होंगे? अभी जयप्रकाशजी युरोप में गये थे। इजरायल के पंत प्रधान 'बेनगूरीयम' के साथ उनकी मुलाकात हुई थी। उन्होंने राजनीति आदि की चर्चा न करके भूदान, ग्रामदान की ही चर्चा की। अच्छी बातें हुई। उन्होंने पूछा कि "इतने अच्छे, क्रांतिकारी कार्य में कितने कार्यकर्ता हैं?" सिद्धराजजी की मदद से जयप्रकाशजी ने खादी, रचनात्मक आदि काम के कार्यकर्ताओं की संख्या गिनकर कहा कि 'कुल पाँच हजार कार्यकर्ता होंगे।' यह सुनकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, ४० करोड़ के देश में इतने अच्छे कार्य के लिए सिर्फ पाँच हजार ही कार्यकर्ता हैं? जयप्रकाश जी को बहुत दुःख हुआ। इसलिए मैं कहता हूँ कि यहाँ शांतिसैनिक बढ़ेंगे तो वीरभूमि राजस्थान बहुत काम करके दिखा सकता है। यह सारा इलाका ग्रामदानी इलाका हो जायगा।

अभी गोकुल भाई ने बताया कि यहाँ पर रचनात्मक काम अच्छा चल रहा है। इसमें शंका नहीं है। कोई कारण नहीं है कि जिस राजस्थान में एक हजार साल तक परकीय सत्ता को प्रवेश नहीं करने दिया—वहाँ पराक्रम का ऐसा नया काम न हो। यहाँ वह चीज पड़ी ही है। ३०-४० साल पहले अखिल भारत खादी मण्डल में हम सोचते थे कि खादी का काम कहाँ हो सकता है, तो हमें यही लगता था कि राजस्थान में हो सकेगा। वहाँ गाँव-गाँव खादीधारी तैयार हो जायेंगे। इस तरह राजस्थान का क्षेत्र बहुत अनुकूल है। शांति-सैनिक मिलेंगे तो यह सारा काम हो जायेगा। यह राणा प्रताप की भूमि है, यहाँ शांति-सैनिक मिलेंगे ही, ऐसी आशा मैं करता हूँ।

राजस्थान में हमारी यात्रा दो, तीन महीने चलेगी। यह समय कम नहीं है, क्योंकि आठ साल भी उसमें जुड़ गये हैं। आठ साल में जो पुण्य हासिल हुआ है, वह पुण्य इस प्रदेश को मुफ्त में मिल गया है। इसलिए यहाँ कुछ-न-कुछ काम करने का जो निश्चय किया गया है वह आप पूरा कीजिये। यह हिसाब करनेवालों की भूमि है। पहले यह प्रदेश तीन हिस्सों में बँटा था, अब एक हो गया है। इसलिए काम करने का आपको अच्छा मौका मिला है।

नमूना तैयार करें

अभी एक भाई ने कहा कि बाबा को किसी एक जिले में हम रखेंगे और वह जिला हम नमूने का बना करके दिखायेंगे। इस विचार को मैं बहुत पसंद करता हूँ। हमारी यह यात्रा एक बार सारे देशभर में पूरी हो जायेगी—ऐसा नहीं है। आप समझ लीजिये कि हमारी यह यात्रा तब तक पूरी नहीं होगी जब तक सारे भारत में ग्रामस्वराज्य की स्थापना नहीं होगी।

लोकमान्य तिलक ने कहा था "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम प्राप्त करेंगे?" पंडित नेहरू जब आये थे तो अपनी सभा में, उनकी उपस्थिति में मैंने इसी बात के आधार पर कहा था कि 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है,' वैसे ही गाँव-गाँव के लोगों को यह महसूस करना चाहिए कि "ग्रामस्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।" यह भावना हमें तैयार करनी है। वह हम करेंगे। स्वराज्य से परकीय लोग हटे। दिल्ली में सत्ता आयी। अभी तक हमारे जो झगड़े थे वे लंदन में प्रिवी कौंसिल में जाते थे। यहाँ के शंकराचार्य और जैनों के झगड़े भी लंदन जाते थे। लेकिन अब हमारे झगड़े वहाँ नहीं जाते, दिल्ली तक ही जाते हैं। पर जब ग्रामस्वराज्य आयेगा, तब हमारे झगड़े गाँव के बाहर नहीं जायेंगे। अब तक हमारा देश ही स्वतंत्र था। अब हमारे गाँव स्वतंत्र होंगे। ग्राम-स्वराज्य तब होगा जब गाँव के झगड़े बाहर नहीं जायेंगे। ऐसी ग्रामस्वराज्य की भावना हमें पैदा करनी है। जब तक हर गाँव में यह ग्रामस्वराज्य नहीं होता, तब तक हमारी यह यात्रा जारी रहेगी।

सवाल है कि इसमें कितना समय लगेगा? मैं हिसाब जानता हूँ, गणिती हूँ परन्तु इस काम को कितना समय लगेगा यह हिसाब मैं नहीं बता सकता हूँ। कुछ लोग कहते हैं कि इस काम को ३०० साल लग जायेंगे। क्या मैं ३०० साल जिंदा रहूँगा? आप मुझे आशीर्वाद दीजिये। मुझे मरने की जल्दी नहीं है। लेकिन परमेश्वर चाहेगा कि इसे जल्दी बुला लेना चाहिए तो यह काम जल्दी हो जायेगा। पहले काम होगा और फिर बुलावा आयेगा। क्योंकि यह जमाना न आपका है, न मेरा। यह जमाना ग्रामदान का है। इसके आगे दुनिया में एक गाँव और दुनिया, ऐसी दो ही चीजें रहेंगी। बाकी बीच में नक्शे में भले ही राष्ट्र वगैरा रहे। पर वास्तव में विश्व और गाँव के बीच कुछ भी नहीं रहेगा।

इधर गाँव उधर विश्व

गाँव का भला बुरा करने की शक्ति गाँव में रहेगी। सारे विश्व का नैतिक कल्याण करने की शक्ति विश्व के हाथ में रहेगी। बाकी सब खत्म होंगे। सारे प्रान्तवाले, जिलेवाले एजेन्ट के रूप में रहेंगे। दुनिया की नैतिक सत्ता विश्व-केन्द्र में होगी और जीवन का सारा कारोबार चलाने की शक्ति गाँव में रहेगी। यों इधर ग्राम और उधर विश्व, ऐसी दो ही चीजें रहेंगी। यह बात वेद भगवान बोल चुके हैं। उस जमाने में विज्ञान इतना आगे नहीं बढ़ा था। इस जमाने में विज्ञान आगे बढ़ा है। ऋषि ने कहा है —"विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम्।" "हमारे इस गाँव में परिपुष्ट विश्व का दर्शन हो।" एक बाजू गाँव और दूसरी बाजू विश्व रहेगा। आगे आनेवाला जमाना ग्रामदान का और 'जयजगत्' का होगा। दोनों एक ही बात है।

मनुष्यों की दो-तीन हजार की बस्ती रहेगी। आपस में भाई-चारा रहेगा। मालकी नहीं रहेगी। सामूहिक जीवन का नमूना बनेगा। ऐसी जितनी भी बस्तियाँ होंगी, वे सारी जोड़नेवाली आखिरी कड़ी होंगी। गाँव-गाँव में राग-द्वेषरहित प्राज्ञ पुरुष बिठाये जायेंगे। वे आज्ञा नहीं देंगे, सलाह देंगे। ऐसे पुरुष समाज में रहेंगे। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि हम लोगों की मृत्यु के पहले यह काम होना चाहिए। मृत्यु के पहले होने का क्या अर्थ? इधर हम विचार समझाते रहें, उनका अमल हो और पृथ्वी पर झगड़े न हों। फिर नई-नई पृथ्वियाँ मिलेंगी। यहाँ मुझे वामन और विराट् की कहानी याद आ रही है। आज की छोटी-सी पृथ्वी वामन की मूर्ति बनेगी, विश्व विराट् बनेगा। उस हालत में हमारे

www.vinoba.in

सब झगड़े ऐसे ही खतम हो जायेंगे। अभी छोटी-छोटी बातों में राग-द्वेष व अनेक प्रकार के झगड़े होते हैं। फिर छोटी-छोटी बातों में अड़े रहने की इच्छा नहीं रहेगी। इसलिए वेद में एक सुन्दर सूत्र है "अघमर्षणम् सूक्त" जिसके जप से पाप का विनाश होता है। परमेश्वर ने ऋत सत्य प्रकट किया। उससे यह सारी पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र आदि बने। ऐसी ऋषि की प्रार्थना है। ऋत से भगवान ने यह सारी सृष्टि बनायी। याने जिसे विश्व-विस्तार का भान है, वह मनुष्य नम्र बनेगा और पाप की भावना खतम हो जायेगी। —विज्ञान के जमाने में यह होगा।

विज्ञान के जमाने में कोई भी हिस्सा कोने में नहीं रहेगा। आपका यह डुंगरपुर जिला आज एक कोने में है। लेकिन जहाँ विज्ञान का प्रचार होगा, वहाँ कोई भी कोना-कोना नहीं रहेगा। जहाँ जो स्थान है वहाँ वैसे ही विश्व का मध्य बिंदु बन जायेगा। फिर जयपुर, कलकत्ता, मास्को जो भी स्थान होगा वह विश्व के मध्य में माना जायगा। यह भान होगा तो फिर 'धन्य राजस्थान' नहीं कहेंगे, तब 'धन्य दुनिया' 'धन्य हरि' कहेंगे। हम मानेंगे कि परमेश्वर ने जो पैदा किया, वह धन्य है। हम मध्य में हैं। जो भी काम हम करेंगे उसका परिणाम सारी सृष्टि में पहुँचेगा। ग्रामदान का काम हमारा यज्ञ होगा। वेद ने गाया है "अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि। इयं वेदी परो अंतःपृथिव्याः।" "यह पृथ्वी का आखिरी हिस्सा है। यही आरम्भ है और यही अंत भी है। मैं यह जो यज्ञ कर रहा हूँ, वह यज्ञ सारी दुनिया का मध्य बिंदु है।"

एटमवाले भी शांति के इच्छुक

शांति-सेना का कार्य ऐसा ही चलेगा। अजमेर में शांति-सेना की रैली होने जा रही है। बच्चा अभी गर्भ में ही है, लेकिन गर्भ में भी गर्जना कर रहा है। परिणामस्वरूप युरोप और अमेरिका के लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि शांति-सेना का विचार बहुत अच्छा विचार है। यह शांति-सेना का विचार सारी दुनिया पर लागू होता है। पहले सिर्फ ब्राह्मण ही 'शांति' का जप करते थे। आज तो हर कोई शांति के लिए जप करता है। यहाँ तक कि एटम, हाइड्रोजन बम जैसे बड़े-बड़े शस्त्रास्त्र पैदा करनेवाले भी शान्ति का जप तो करते ही हैं। वे अशांति फैलाना चाहते नहीं है, परन्तु अशांति फैला रहे हैं। वे शस्त्रास्त्र भी बढ़ा रहे हैं और ऐसा मानते हैं कि शांति स्थापना के लिए यह हो रहा है।

अभी एक भाई पूछता था कि 'चीन, अमेरिका, रूस सब देश शांति के लिए कोशिश करते हैं, आपकी क्या राय है ?' मैंने कहा हरएक राष्ट्र शांति की इच्छा करता है, ऐसा मैं मानता हूँ। जान-बूझकर कोई अशांति नहीं चाहता है। शांति की चाह दुनिया में पड़ी ही है। इसलिए यहाँ शांति-सेना का काम होगा तो उसका असर सारी दुनिया पर होगा। यह छोटी-सी चिनगारी कुल दुनिया के अज्ञान, अविश्वास और भय को खतम करेगी।

शांति-सेना की चिनगारी यहाँ सुलगे और उसकी अग्नि प्रकट हो, यही मेरी इच्छा है। मेरा विश्वास है कि यहाँ काम जरूर होगा। अनेकों भाई-बहन बहुत उत्सुकतापूर्वक देहात से आते हैं और कुछ काम होगा, ऐसा उन्हें लगता है। यह एक सद्भावना ही है। जो सद्भावना अंदर प्रकट होती है, वही प्रभु की वासना है। कुरान में लिखा है :

मैं मानता हूँ कि इस काम में परमेश्वर अव्यक्त रूप में प्रकट है और हमें सतत प्रेरणा दे रहा है और यह जो शरीर है वह उसका औजार है, उसकी इच्छा से वह इससे काम ले रहा है। नहीं तो क्या वजह थी कि इस क्षीण देह से कोई काम हो ? आज ही डॉक्टर आये थे और पूछते थे कि आपको इतना चलना है और काम करना है तो ज्यादा खाना चाहिए। आप कितना खाते हैं ? मैंने कहा ११०० कॅलरीज से कम नहीं खाता हूँ और १२०० कॅलरीज से ज्यादा नहीं खाता हूँ। ज्यादा खाऊँगा तो चलने का काम नहीं होगा।

अल्सर से चलने की प्रेरणा

सात आठ साल पहले की बात है। डॉक्टर ने मेरी परीक्षा की थी। जयपुर काँग्रेस के लिए मैं आया था। डॉक्टर ने कहा था कि आठ महिना पूर्ण आराम करना चाहिए और उसने सारी चिकित्साविधि लिख दी। इधर आठ साल से हमारी यह पैदल यात्रा चल ही रही है। Walking Cure 'वाकिंग क्योर' (चलती-फिरती चिकित्सा) हो रही है। अभी एक बडी सुन्दर किताब में मैंने पढ़ा कि पेट में 'अल्सर' जैसा सुन्दर रोग हो तो वह जीवन का साथी है। इसलिए प्रेम से उसे सम्हाल कर रखो। यह किताब जब मैंने पढ़ी तब मुझे लगा कि दूसरे लोग साथ दे न दें,तो भीयह रोग तो मेरा साथ देगा ही। यह रोग जब से हुआ है तब से चलने को प्रेरणा दे रहा है। मनुष्य को रोग हो तो वैराग्य की प्रेरणा मिलती है। आराम हो, संतोष हो तो वैराग्य की प्रेरणा नहीं मिलती है। फिर तो मनुष्य आलसी ही बन जाता है।

आज ही एक भाई ने पूछा कि सेना में भी रोजमर्रा के काम से एक दिन छुट्टी होती है, आप एकाध दिन आराम क्यों नहीं करते हैं ? शरीर के लिए एक दिन की छुट्टी लेनी चाहिए। मैंने कहा तीस साल वर्धा में मैं काम करता था, तब भी मैंने कभी एक दिन की छुट्टी नहीं ली थी। अब तो आराम ही करता हूँ तो छुट्टी क्यों लूँ ? यह तो मेरा आराम ही चल रहा है। इतने भाई, बहनें एवं बच्चे आये हैं। उनके दर्शन से बहुत आनन्द होता है। आठ साल से यह आनन्द मुझे मिल रहा है। ऐसा मंगल दर्शन रोज होता है, तो थकान खतम हो जाती है। आज कोई १४, १५ मील चलना हुआ। गोकुल भाई कहने लगे "आपको पहले ही दिन हमने तकलीफ दी ! माफ कीजिये।" मैंने कहा उसमें क्या हुआ ? ज्यादा चलना हुआ तो उतनी हवा ज्यादा मिली। उतना सूर्य नाराण का स्पर्श अधिक मिला, उतना आकाश सेवन ज्यादा हुआ और नुकसान कुछ भी नहीं। हाँ ! अब घर पर आकर खूब खाऊँ तो आपको भी तकलीफ होगी और मुझे भी। इसलिए दो-तीन मील इधर-उधर हुए तो कोई पर्वाह नहीं।

इस विचार को हम बनानेवाले हैं, ऐसा मत समझिये। यह समझ लीजिये कि परमेश्वर की प्रेरणा काम कर रही है, हम नहीं। परमेश्वर को भूलेंगे, तो उससे अलग होकर हम काम नहीं कर पायेंगे। हम नहीं होते जो दूसरा कोई होता। वह उठता और काम करता। यह तो उसके हाथ का खेल चल रहा है। इसमें हम कुछ नहीं कर रहे हैं। इसलिए थकान नहीं महसूस होती है और अहंकार भी मालूम नहीं होता।

राम उल्लास समान

मैं आप से कहना चाहता हूँ कि यह बहुत आनन्द की बात है कि कार्यकर्ताओं की संख्या बड़ी नहीं है। लेकिन परमेश्वर की प्रेरणा समझकर वे काम में लगे हैं। और जवानी में घर छोड़कर दर-दर घूम रहे हैं। उनके लिए इन्तजाम था, वह भी हमने तोड़ डाला। ऐसे हम अपने साथियों के प्रेमी हैं। गांधी-निधि से मदद मिलती थी, वह कुछ ज्यादा नहीं थी, उसे भी

www.vinoba.in

हमने बन्द कर दी। उस समय हम आन्ध्र में थे। वहाँ के प्रसिद्ध कवि त्यागराज का तेलगु भाषा में एक वचन है जिसका अर्थ है कि 'निधि श्रेष्ठ है कि राम-सन्निधि ?' हमने कहा 'हमें राम-सन्निधि चाहिए, निधि नहीं।' यह कहकर हमने वह मदद तोड़ डाली। इन बच्चों को अब कोई खास आधार नहीं रहा है।

तुलसीदासजी ने रामायण में लिखा है, रामचन्द्रजी ने जब सुना कि अब राज्याभिषेक नहीं होगा, अब तो वन में जाना है, तो उन्हें कैसा आनन्द हुआ ? जैसे अभी जंगल से कोई हाथी पकड़ के लाये हो, वह जंजीर से जकड़ा हो, उसकी जंजीर टूट जाय तो जैसे छलाँग मार के आनन्द से वह दौड़ता है उसी तरह रामचन्द्रजी को अत्यन्त आनन्द हुआ। अब राज्य नहीं, अब तो जंगल का राज मिला है। वे कौसल्या के पास आशीर्वाद लेने गये तब उसने पूछा कि क्या पिता की आज्ञा मिली ? माता की आज्ञा मिली ? मानों वह माता ही नहीं थी, उसने रामचन्द्रजी से कहा कि 'हमारे क्षत्रिय राजा अन्त में वनवास जाते ही हैं। पर एक ही बात मन में जरा खटकती है कि तुम्हें जवानी में ही जाना पड़ता है।' जो सौभाग्य रामचन्द्रजी को जवानी में हासिल हुआ था, वह भाग्य हमारे इन जवानों को आज हासिल हुआ है। डेढ़-दो हजार की उनकी संख्या है। क्या मनुष्य को भोग प्रिय नहीं होता है ? होता है, परन्तु उसे छोड़कर ये जवान घूम रहे हैं। वे यह समझते हैं कि हम अपनी प्रेरणा से काम करते तो इतना काम नहीं होता। वे अगर चाहते तो सरकार के सेवा के क्षेत्र खुले ही हैं। उसमें अपना संसार भी अच्छा कर सकते थे। ऐसा मौका भारत को मिला है, तो भी भारत के कुछ जवान सब छोड़ कर जंगल में घूम रहे हैं। काम का सारा बोझ अपने सिर पर हैं, यह समझकर इसे उठाते तो उस बोझ के नीचे वे खत्म हो जाते। पर वे जानते हैं कि परमेश्वर की प्रेरणा काम करती है। इसलिए जो परमेश्वर मुझसे काम ले रहा है, वह आपसे भी लेगा, ऐसी उम्मीद मैं करता हूँ।

◆◆◆

हरिजन सेवक संघ के कार्यकर्ताओं के साथ

पड़ाव : बालम (महेसाणा) २७-१२-५८

हरिजन सेवा की नई दिशा !

गांधीजी ने 'हरिजन-बन्धु' नाम का पत्र निकाला। प्रारंभ में उसमें सब कुछ हरिजनों के बारे में ही लिखा रहता था। लेकिन बाद में वह पुराने 'नवजीवन' जैसा ही बन गया। उसमें राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक चर्चाएँ भी आने लगीं। इस पर बहुत-से लोग शिकायत करने लगे कि नाम तो 'हरिजन-बन्धु' है, पर उसमें हरिजनों के बारे में कुछ नहीं है। इस राजनीति शास्त्र, धर्म शास्त्र व समाज शास्त्र आदि से हरिजनों का क्या सम्बन्ध है ? बापू ने इस कुछ नहीं को ही सब कुछ बना दिया। मान लीजिए वे उस प्रश्न को एकांगी रूप ही देते, तो उसका समाज पर क्या असर होता ? सिर्फ हरिजनों की सेवा के नाम पर अन्य सभी प्रश्नों को गौण करने से न तो हरिजनों की अधिक सेवा होती और न धार्मिक, राष्ट्रीय शिक्षा आदि विषयों में सुधार ही हो पाते। सामाजिक सुधारों को आज जो प्रगति हुई है, वह भी न हो पाती।

यही कारण है कि बापू ने हरिजनों के प्रश्न को स्वराज्य प्राप्ति तथा धर्म शुद्धि का अनिवार्य साधन बताया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि अस्पृश्यता निवारण किये बिना धर्म भी नहीं टिक सकेगा। इस तरह इस प्रश्न को इतना व्यापक रूप देने का ही परिणाम है कि मामा जैसे धार्मिक वृत्ति के पुरुष भी उनसे आ मिले। अन्यथा धार्मिक वृत्ति के लोग समाज सुधार के काम में प्रायः कभी योग नहीं देते और न समाज सुधारक ही धार्मिक मेलों में योग देते हैं। इस प्रश्न को राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप देने के कारण ही वे परस्पर विरोधी लोगों को अपने काम में ला सके। इस तरह बापू के जीवन से स्पष्ट है कि हरिजन-आन्दोलन का प्रश्न संकुचितता के दायरे से ऊपर उठाकर व्यापक रूप में रखना चाहिए।

अब देश को स्वराज्य मिल जाने के बाद हमारा दूसरा काम क्या हो सकता है ? स्पष्ट है कि वह ग्राम-स्वराज्य ही होगा। ग्राम-स्वराज्य का आधार हम लोग ग्रामदान को मानते हैं। पहले जमाने में जो राष्ट्रीय आन्दोलन था, आज उसी स्थान पर आता है ग्रामदान। ग्रामदान के एक अंग के रूप में हम हरिजन कार्य को मानते हैं और इसी दृष्टि से यह चलना चाहिए। जब तक अस्पृश्यता का निवारण नहीं होता, ग्रामदान के आधार पर ग्राम-स्वराज्य की स्थापना ही नहीं हो सकती। आज आप लोगों को जो मालूम पड़ता है कि अस्पृश्यता-निवारण हो गई, वह गलत है। उसमें कोई अर्थ नहीं है।

हरिजन-मंदिर-प्रवेश ही पर्याप्त नहीं

हरिजन सेवक संघ यह समझकर सन्तोष न मान ले कि हरिजन मन्दिर में चले गये, तो हमारा काम हो गया। पंढरपुर में मैं अन्य धर्मवालों को साथ में लेकर मन्दिर में गया था। वहाँ महाराष्ट्र के बहुत-से पत्रों ने मेरी यह टीका की कि 'विनोबा का यह काम बापू के कार्य के विरुद्ध कदम है। इसमें हिन्दू धर्म के सुधार की बात नहीं है।' इस तरह यदि हम हरिजन-सेवा के महान् विचार के एक अंग को उससे अलग रखेंगे, तो वह मार खाने की ही बात होगी। इस समय मन्दिर प्रवेश का अर्थ अमुक कौम को ही मन्दिर में प्रवेश करा देने से परिपूर्ण नहीं हो जाता। आज हरिजन-सेवा का अर्थ व्यापक करना होगा और हिन्दू-धर्म को भी इतना व्यापक बनाना होगा कि उसमें अन्य धर्मों का भी समावेश हो सके। उसकी प्रार्थना में भी सभी का समावेश हो सकना चाहिए।

हिन्दू-धर्म की शुद्धी का काम बापू ने किया। अब हमें एक कदम आगे बढ़कर उसके विकास का काम करना चाहिए। उसका ही नहीं, हमें सभी धर्मों का विकास करना चाहिए। जब तक धर्म विकास का काम पूरा नहीं होता, तब तक ग्राम-स्वराज्य का कुछ भी मूल्य नहीं और न वह हो ही सकता है। इस तरह हरिजन कार्य का सम्बन्ध आज के जमाने में राष्ट्रीय और धार्मिक कार्य हो जाता है। अतएव उस कार्य का स्तर ऊँचा उठना चाहिए और उसके सेवक गिने-गिनाये ही नहीं, बल्कि हजारों की संख्या हों तथा वे यह काम उठा लें।

आर्थिक समानता अनिवार्य

प्रश्न : हम यह देख चुके हैं कि अस्पृश्यता का सामाजिक दुर्गुण आर्थिक उन्नति से हल नहीं हो पाता। इसलिए गरीबी के रोग के साथ-साथ अस्पृश्यता का रोग किस तरह मिटाया जा सकता है ?

उत्तर : यह सच है कि आर्थिक उन्नति से यह सवाल हल नहीं होता। लेकिन आर्थिक उन्नति के बगैर भी यह सवाल हल नहीं होता, यह भी समझ लेना चाहिए। आर्थिक उन्नति का काम

www.vinoba.in

उतना ही जरूरी है, जितना कि विचार-परिवर्तन का काम। कारण, आप देखेंगे कि इस अस्पृश्यता को लाने में उसके मूल में आर्थिक योजना ही थी।

जब मुसलमानों ने क्षत्रियों को जीत लिया, तो उनसे 'एसेन्शियल सर्विस' के तौर पर मेहतर का काम कराया। फलतः हिन्दू भी उन्हें अछूत मानने लगे। इस तरह क्षत्रिय कौम ही भंगी बनी। फिर वंश-परम्परागत भंगी होने लगे। इस तरह आर्थिक योजना के कारण ही यह चीज बनी। अतः यह स्वाभाविक है कि आर्थिक उन्नति के बिना यह काम नहीं हो सकता।

आर्थिक उन्नति का यह अर्थ नहीं कि उन्हें पैसा ही मिले। बल्कि प्रतिष्ठा पूर्वक पैसा मिलना ही सच्ची आर्थिक उन्नति है। यदि यह नियम बना दिया जाय कि 'भंगी वही हो सकता है, जो मैट्रिक पास हो।' तो उसे प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी। फिर उसका वेतन भी बढ़ना चाहिए। आज यही चल रहा है कि जिसकी जितनी अधिक प्रतिष्ठा हो, उसको उतना ही अधिक वेतन दिया जाय। अतएव हरिजनों की आर्थिक उन्नति के साथ-साथ उनकी प्रतिष्ठा भी बढ़नी चाहिए। फिर इस सेवा के रचनात्मक कार्यों को राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ भी देना चाहिए। खादी का काम भी इसी तरह का है। जब-जब राष्ट्रीय आन्दोलन जोर पकड़ता, तब-तब लाखों की खादी बिकती। और जब आन्दोलन ठंढा पड़ता, तो खादी की बिक्री भी घट जाती। बेचनेवाले कहते कि गत वर्ष नफा हुआ था, पर इस वर्ष घाटा होगा। सभी रचनात्मक कार्य नाव जैसे हैं। मैं रचनात्मक कामों को नाव की उपमा देता हूँ। राष्ट्रीय आन्दोलन का पानी न हो, तो वह नाव बैठी ही रह जायगी। इसलिए ऐसे कामों को धर्म विकास और राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्यक्रम के साथ बिठाना चाहिए। यदि हम यह करें, तो आर्थिक उन्नति और विचार का परिवर्तन सरलता से हो सकता है, ऐसा मैं मानता हूँ।

सत्याग्रह सौम्यतर हो

प्रश्न: राजस्थान में एक जगह विशेष प्रसंग में आपने हरिजनों के लिए अलग कुआँ बनाने की बात कही। अतः इस बारे में साधारण नीति क्या हो सकती है?

उत्तर: एक आदमी गाँव में हरिजन-सेवक के तौर पर काम करता था। उसने गाँववालों से आग्रह किया कि गाँव के कुएँ पर हरिजनों को पानी भरने को सुविधा होनी चाहिए। लेकिन गाँववाले मानें नहीं। उसने इसके लिए आन्दोलन किया। फिर भी उसकी कुछ भी नहीं चली, तब उसने अनशन शुरू किया। कितने दिन अनशन किया, यह मुझे निश्चित पता नहीं, फिर भी पाँच-सात दिन हुए ही होंगे। उसके बाद गाँववाले कहने लगे: 'आखिर आप क्या चाहते हैं? हरिजनों के लिए पानी की सुविधा ही चाहते हैं न? तो हम लोग उनके लिए स्वतन्त्र कुआँ बना देते हैं, आप अनशन तोड़ दें।' इस पर यह प्रश्न उठा कि 'इस तरह हरिजनों के लिए कुआँ तो बन जायगा, लेकिन सार्वजनिक कुआँ उनके लिए नहीं खुलेगा। याने इनके विचार के अनुसार नहीं होगा।' इसलिए उन्होंने मुझे पत्र लिखा, या तार किया। इस प्रश्न के उत्तर में मैंने एक व्याख्यान दिया और वही उसे भेज दिया। उसके साथ यह तार भी भेजा कि आप अनशन त्याग दीजिये और हरिजनों के लिए स्वतंत्र कुआँ बनने दीजिये। उस व्याख्यान में मैंने कहा कि आज के विज्ञान-युग में मानसिक भावना की टक्कर जितनी कम हो, उतना करना चाहिए। हर प्रश्न को मानसिक क्षेत्र से अलग रखना चाहिए। विचार-क्षेत्र में परस्पर विचार-विनिमय से काम करना ही विज्ञान-युग के लिए अनुकूल होगा। विज्ञान-युग में मन की भूमिका नीचे आ गयी और विचार की भूमिका ऊपर उठती है।

आज दुनिया में सर्वत्र भयानक शास्त्रास्त्र पैदा हो रहे हैं, अतः जागृत होने की आवश्यकता है। यह कहकर हम अभी भय नहीं पैदा कर रहे हैं। फिर भी यह बताना चाहते हैं कि आज ऐसे सभी साधन हमारे हाथ आ गये हैं कि अब राष्ट्र की सीमाएँ टिक नहीं सकतीं। सारी दुनियाँ एक ही राष्ट्र बन जायगी, ऐसा ही सर्वत्र वातावरण है। विज्ञान के कारण ही ऐसा वातावरण बन गया है। अतः यह आवश्यक है कि स्थानिक प्रश्न कितने ही महत्त्व के क्यों न हों, उन्हें इसी तरह हल करना चाहिए, जिससे कम-से-कम मानसिक क्षोभ हो।

मान लीजिये कि वह आदमी अपना यह हठ पकड़े रहता कि 'जब तक आप हरिजनों के लिए स्वतंत्र कुआँ नहीं बना देते, तब तक मैं अनशन नहीं छोड़ सकता।' और गाँववाले भी यह हठ पकड़े रहते कि 'भले ही यह मर जाय या बीमार हो जाय, हम लोग हरिजनों के लिए स्वतंत्र कुआँ नहीं बनायेंगे।' अथवा यह मर जायगा, इस भय से वे लोग नया कुआँ बना देते, तो इसे मैं हानिकारक मानता। यदि वह मर जाता तो वह भी हानिकारक ही होता। उससे उनके हृदय में प्रवेश नहीं हो पाता। व्याकुलतावश उस आदमी के लिए भले ही कुआँ बना दिया जाता, पर उनके हृदय में प्रवेश नहीं हो पाता। जब तक हृदय से अस्पृश्यता की बात नहीं मिटती, तब तक अनशन की धमकी से काम कराना इस युग में ठीक नहीं है।

इस पर मैंने गहरा विचार किया, तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैंने जो सलाह दी, वह उचित ही थी। विज्ञान युग में ऐसे-ऐसे शस्त्र आविर्भूत हो चुके हैं कि घर बैठे-बैठे ही हजारों मीलों की दूरी तक उनसे प्रभाव डाला जा सकता है। ऐसी स्थिति में सत्याग्रह क्या कर सकता है? अब हमें ऐसी की खोज करनी होगी, जो घर बैठे दुनिया में परिवर्तन कर दें। अभी वैसी शक्ति हाथ नहीं लगी है, उसकी खोज जारी है। अतः इस तरह के अनशन विज्ञान-युग में बहुत समझ-बूझकर ही करने चाहिए। इसीलिए मैंने कहा कि ये लोग धीरे-धीरे बात समझ जायँगे। अन्ततः सभी कुएँ हरिजनों के लिए खुलकर ही रहेंगे। किन्तु उसके लिए रास्ता उन पुराने सन्तों का ही पकड़ना होगा। हम हृदय में प्रवेश किये बिना मन्दिर-प्रवेश नहीं चाहते। हृदय-प्रवेश ही मुख्य वस्तु है और इसी दृष्टि से सारा काम होना चाहिए।

कई लोग कहते हैं कि 'हरिजनों को जगाना चाहिए और कानून द्वारा उन्हें जो अधिकार प्राप्त हैं, उन्हें अमल में लाना चाहिए।' मैं उन्हें यह करने से नहीं रोकता, लेकिन यह काम वकील लोग उठा लें, तो अच्छा होगा। मैं यह काम नहीं उठाऊँगा, यदि मैं इसीमें लग जाऊँ, तो कानून से परे की शक्ति संगृहीत करने का रास्ता ही बन्द हो जायगा, जिसके लिए मेरा यह प्रयत्न चल रहा है। अतः कानूनन अधिकार प्राप्त होने के बावजूद भी यदि हरिजनों को होटलों में प्रवेश नहीं मिल पाता, तो उन्हें वह प्राप्त कराने का काम खुद वकील लोग ही उठा लें। वे कानून में निष्ठा रखते हैं और उसी पर उनका जीवन चलता है। बिच्छू पकड़ना हो, तो वह हाथ से नहीं पकड़ा जाता। वह सँड़सी से ही पकड़ा जाता है। अतः यह काम वकील लोग ही करें।

www.vinoba.in

हरिजन विद्वान् बनें

प्रश्नः—अपने काम का प्रभाव विशेष पड़े, इसके लिए हरिजन-सेवक कौन-सा विशेष अभ्यास और साधना करें ?

उत्तरः—एक वैद्य था। उसके पास कोई भी रोगी आता, तो वह रेडी का तेल ही पिलाता था। इससे उसका नाम 'रेडीवाला वैद्य' पड़ गया। इसी तरह आप मुझसे यह सवाल पूछें, तो मैं भी एक ही बात कहूँगा कि आप लोग आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करें। यदि आप इस बात को बहुत ऊँचा कहेंगे, तो मैं मानता हूँ कि वह भारतीय संस्कृति ही न होगी। फिर तो यही कहना होगा कि हम भारत को पहचानते ही नहीं।

आज ही एक भाई मुझसे मिलने आये थे। बड़े ही क्रान्तिकारी विचार के थे और अमेरिका में काम करते थे। वे दार्शनिक थे। उन्होंने कहा कि 'आप दान, यज्ञ, तप, कृष्णार्पण, समर्पण' जैसे सभी पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग कर समाज को समझाते हैं। किन्तु उससे जो शक्ति पैदा होती है, उसका हम लोगों को भान ही नहीं है।' यदि आप अपने देश की शक्ति न पहचानें और जो शक्ति नहीं आयी है, उसे उपयोग में लायें, तो वह ठीक वैसा ही हुआ, जैसे खेत में होनेवाला गेहूँ न खाया जाय और जो चावल नहीं हुए, उनकी आशा लगाये बैठे रहें! फिर तो भूखे मरने की ही नौबत आयेगी! इस पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि फिर आप सब तुलसी-रामायण, कबीर के दोहे, ज्ञानेश्वरी आदि में प्रवीण क्यों नहीं होते ? इन सब ग्रन्थों को पढ़कर हरिजन उनपर प्रवचन क्यों न दें ? हरिजनों में से कोई आचार्य क्यों न निकले ? मैं तो आवश्यकता को तभी मिटा हुआ मानूँगा, जब कि उन्हें शंकराचार्य की गद्दी पर शंकराचार्य रुप में बैठने का आमन्त्रण दिया जाय। उन्हें यह शक्ति संगृहीत करनी चाहिए।

इसलिए हरिजन सेवा का थोड़ा-बहुत काम हो जाय, तो उतने से संतोष कैसे माना जा सकता है ? यह सेवा कार्य तो किया ही जाय। लेकिन ऐसे हरिजन भी क्यों न निकलें, जिनमें आध्यात्मिक ज्ञान हो, जो सर्व भूतों को हरिरूप में देखते हों और जिनमें यही मानकर सेवा करने की ऊँची वृत्ति हो ? तमिलनाड़ में एक नन्दनाथ ऐसा ही हो गया है।

आज हरिजन सेवक संघ वाले चोखा मेला जैसे चार पाँच लोगों के नाम लेकर काम करते है, सर्वत्र उनके चित्र चिपकाते हैं और उनमें गांधीजी का नाम लिख देते हैं। फिर महात्मा फुले आदि दो-तीन नाम जोड़ देते हैं। बुद्ध, कबीर आदि के नाम लेकर काम करते ही हैं। आखिर यही शक्ति हरिजनों में क्यों नहीं आ सकती ? अतएव हमे ऐसे आश्रम खोलने चाहिए, जहाँ हरिजन बालकों और अन्य बालकोंके लिए आध्यात्मिक ज्ञान की योजना हो। यदि हिन्दुस्तान में ऐसा एक की आश्रम चले, तो देश की आध्यात्मिक शक्ति का भी बढ़ जायगी।

प्रश्न : गुजरात में हरिजनों को जो १।३ जमीन देनी चाहिए, वह नहीं दी जाती। उस बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर : गुजरात में न केवल हरिजनों को बल्कि दूसरों को भी जमीन नहीं मिली। जहाँ कहीं मिली हो, उसका १।३ भाग तो हरिजनों को मिलना चाहिए। यदि न मिलता हो, तो वैसा करने के लिए कार्यकर्ताओं को आदेश मिलना चाहिए। यदि सरकारी जमीन की बात हो, तो हरिजनों की सहकारिता बना लेनी चाहिए।

(वर्ष ३, अंक ४ के प्रथम प्रवचन पृष्ठ २६ से आगे का अंश)

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पड़ाव : लिखितिया (राज) १६-१-५९

ग्रामदान ही गाँव को बचा सकता है

यह सारा पंड्याजी की सेवा का क्षेत्र है। वे आज बरसों से लगातार सेवा में लगे हुए हैं। मेरा विश्वास है कि यह पूरा-का-पूरा विभाग ग्रामदानी विभाग हो जायगा।

एक दुःखद कहानी मुझे याद आती है। दस साल पहले डुंगरपुर के विभाग में मैं पैदल आया था। मुझे डुंगरपुर जाना था। पंड्याजी भी साथ थे। डुंगरपुर से कोई सात-आठ मील के अन्तर पर एक छोटा गाँव था। वहाँ पर हम दस-पंद्रह मिनट ठहरे, और कुछ घरों में गये तो देखा कि उस दिन कुछ घरों में खाने के लिए अनाज नहीं था—और वह था दीवाली का दिन। मैंने उनसे पूछा कि, "तुम आज क्या खाओगे ?" तो बोले, "मजूरी के लिए भाई गये हुए हैं, वे शाम को मजूरी लेकर आयेंगे। कुछ अनाज लायेंगे तब रसोई पकायेंगे, फिर खायेंगे।" यह है करीब दो-तीन बजे की बात! उसी दिन, उसी रात को चले गये हम डुंगरपुर! वह शहर है और दीवाली का दिन था वहाँ खूब रोशनी भी थी। लोग मजा कर रहे थे। उस दिन बड़े दुःख के साथ कहना पड़ा डुंगरपुर शहर में कि "भाईयों, यह क्या हालत है ? इधर तो तुम लोग बड़ा आनन्द भोग रहे हो, मजा कर रहे हो, और यहाँ से सात-आठ मील दूरी पर हमने ऐसे गाँव देखें हैं कि जहाँ पर आज लोगों को खाने को अनाज भी नहीं था। दिन भर मजूरी करके शाम को अनाज लायेंगे और फिर खायेंगे।"

यह भीलों के क्षेत्र की हालत थी। अभी सुनाया गया कि सरकार ने कुछ कुँए वगैरह बनवाना शुरू कर दिया है, भीलों के लिए। यह बहुत खुशी की बात है। उन दिनों भी स्वराज्य तो आया ही था। लेकिन फिर भी कई मुश्किलें थीं और काम शुरू नहीं हुआ था। लेकिन अब तो स्वराज्य का काम शुरू हो गया। सरकार काम करने लगी है—और कुछ-न-कुछ काम करती है। सरकार ने कुँए वगैरह बनाने का काम शुरू किया है; बहुत अच्छा काम है। लेकिन सरकार कुछ करेगी, उसका लाभ कब मिलेगा ? आज जब कि तुम अलग-अलग रहोगे, इसका यह, उसका वह, मेरी यह खेती, इसकी यह खेती और उसकी वह खेती; घर अलग, खेती अलग, एक दूसरे के साथ कोई ताल्लुक नहीं, परस्पर प्रेम, विश्वास नहीं—जैसे जंगल के जानवर रहते हैं, उस मुताबिक रहोगे तो सरकार कितनी भी कोशिश करेगी तो भी काम नहीं बनेगा, सरकार कुछ करेगी उसका लाभ भी नहीं मिलेगा। काम तब बनेगा, जब तुम मिल-जुल के रहोगे।

यह ग्रामदान से हो सकता है

यह ग्रामदान से हो सकता है। इसलिए आज ग्रामदान होना चाहिए। आज एक बहन आयी थी। वह खूब गाना गाती थी। ग्रामदान का नाम बोलती थी। आजकल बहनों में ग्रामदान की बात चलती है, यह बहुत खुशी की बात है। ये सारी बहनें इस बात को पसंद करेंगी, ये भाई भी ग्रामदान को पसंद करेंगे। लेकिन भाइयों की अपेक्षा ये बहनें इस चीज को ज्यादा पसंद करेंगी। बच्चों की सम्हाल करना, यह बहनों का काम है। बच्चों के लिए माताएँ बड़ी फिक्र में रहती हैं। माताओं को अपने खाने

www.vinoba.in

की फिक्र नहीं रहती है। आज न मिले तो कल मिलेगा। लेकिन बच्चों को आज मिलना ही चाहिए। ऐसी फिक्र उनको रहती है। माताएँ यह जानती हैं कि भगवान ने हर घर में बाल-बच्चे दिये हैं। जिनके घर में भूमि नहीं है उनके घर में भी भगवान ने बच्चे दिये हैं, कम जमीनवाले के घर में भी बच्चे दिये हैं; और जिनके पास ज्यादा जमीन है, उनके घर में भी बच्चे दिये हैं। माता समझ सकती है कि बच्चे को क्या आवश्यक है?

मैंने कहा कि जमीन की मालकी छोड़ दो। मिल-जुल के रहो। जमीन सबकी होनी चाहिए। एक दूसरे को मदद करो। यह बात माताएँ बहुत अच्छी तरह से समझ सकती हैं। हर घर के बच्चों का पालन, पोषण, रक्षण और शिक्षण होना चाहिए। बच्चों को पालन, पोषण, रक्षण और शिक्षण कैसे मिलेगा? यह तब मिलेगा जब कि यह सारी जमीन, जो भगवान की दी हुई है, वह सबके लिए हो। अगर हम यह समझें कि जमीन भगवान की देन है; लेकिन मेरे लिए ज्यादा और दूसरों के लिए कम, तो यह गलत बात है। ऐसा नहीं हो सकता। यह हवा है। हवा किसी को कम और किसी को ज्यादा मिले, क्या ऐसा होगा? हवा सबको मिलनी चाहिए। इसलिए भगवान ने हरेक को एक नाक दे दिया। उस नाक से सब लोग हवा ले लें। पानी सबके लिए है और भगवान की देन है। वैसे ही जमीन भी सबके लिए है और भगवान की देन है यह हम समझें।

केवल जमीन ही एक चीज हमारे पास है जिससे अनाज का उत्पादन होता है और हम खाते हैं, वह सबको हो जाए। फिर सुख-दुख बाँट लें। हम खाते-पीते हैं, पड़ोसी दुखी है और हम उसे देखते रहे तो क्या हमें अच्छा लगेगा? जो दूसरे मनुष्य के दुख की परवाह नहीं करता, वह जानवर है। जानवरों को दूसरों के दुख से दुख नहीं होता है और सुख से सुख नहीं होता है। उसे दूसरों के सुख-दुखों की कोई परवाह नहीं है। किन्तु मनुष्यों को दूसरों के दुःखों की और दूसरों के सुखों की परवाह है। इसलिए ये माताएँ और भाई समझ सकते हैं कि हम अगर ग्रामदान में एक हो जायेंगे तो हमारी ताकत बढ़ जायेगी।

एक मुँह दो हाथ

भगवान ने दो हाथ तुमको दिये हैं और दो हाथ मुझे दिये हैं। तुम्हारे दो हाथ और मेरे दो हाथ मिल के चार हाथ हो जायेंगे। उससे शक्ति बढ़ेगी। लेकिन आज क्या होता है? तुम्हारे दो हाथ मेरे दो हाथों के खिलाफ काम करते हैं। फिर तुम्हारे दो हाथ और मेरे दो हाथ मिलकर चार हाथ होंगे? यदि चार हाथ नहीं होंगे तो कुछ भी नहीं होगा। इसलिए हम मिल जुलकर काम करें। (बाबाने एक बच्चे से पूछा) इस सभा में कितने हाथ हैं? (लड़का जवाब नहीं दे पाया) इस बच्चे को आकड़ों का क्या ज्ञान होगा? अरे हजारों हाथ हैं। लेकिन कहते हैं कि हमारे घर में खानेवाले दस मुँह हैं। खानेवाले दस मुँह हैं तो काम करने वाले कितने हाथ होंगे? बीस हाथ काम करने वाले हैं। दूसरे घरवाले कहते हैं कि हमारे घर में खानेवाले चार मुँह है, तो वहाँ पर काम करनेवाले आठ होंगे। भगवान की कितनी दया है? इतना सा बेचारा पेट इतनासा बेचारा मुँह और हाथ कितना लम्बा है? (अपना हाथ लम्बा करके) यह इतना लम्बा है। फिर भी दो हाथों से काम करके भी तुम अपना पेट नहीं भर सकते। क्योंकि तुम्हारे दो हाथ मेरे दो हाथों के खिलाफ लड़ते हैं। ऐसी टक्कर लेते रहेंगे तो हम सुखी नहीं हो सकेंगे।

यह सारा विभाग कुल-का-कुल ग्रामदान हो सकता है। फिर इसमें देरी क्यों होनी चाहिए? यह राणा प्रताप का प्रदेश है। इसमें वीरता और त्याग है। तुम ग्रामदान करने की प्रतिज्ञा करो तो हो सकता है। आज ये बच्चे हैं—जिन्हें समझ में नहीं आता है। ये बहने हैं—जो पढ़ना नहीं जानती। इसलिए ये तुलसीदास का रामायण भी पढ़ नहीं सकतीं। आँखवाले होते हुए भी जो तुलसी-रामायण नहीं पढ़ सकते हैं, वे अन्धे ही हैं। इसलिए गाँव के बच्चों को हम तालीम देंगे, तुलसी-रामामायण पढ़ने के लिए। यह तालीम देने के लिए भी आप में से कोई निकले। एक घन्टाभर बच्चों को सिखायें। बाकी दिनभर वे बच्चे कुछ-न-कुछ काम करें। शाम को सब लोगों को इकट्ठा करें और भगवान का नाम लें। रामचन्द्र, श्रीकृष्ण आदि की कथा सुनने को मिलनी चाहिए। यह सुनने को नहीं मिला और खाने को मिला तो भी कोई काम का नहीं। हर गाँव में शाम को सभा होनी चाहिए और रामायण की कथा और गीता सबको सुनाना चाहिए। यह सारा कब होगा? यह तब होगा जब आप ग्रामदान में एक हो जायेंगे।

पंड्याजी इस क्षेत्र में २५-३० साल से काम करते हैं। वे चाहते हैं कि ये भील एक हो जाय। और कुल गाँवों का ग्रामदान हो जाय। जमाना जोरों से आगे बढ़ रहा है तो फिर भील ही पीछे क्यों रहें? इसलिए अब उन्हें भी आगे बढ़ना होगा! क्या हमारे ये गाँव आगे नहीं बढ़ेंगे?, जरूर बढ़ेंगे।

पंड्याजी किसी-न-किसी को मदद करते ही हैं। एक को मदद की, दूसरे को की, तीसरे को की। इस तरह से किन-किन को वे मदद देंगे? उदयपुर से एक लोटाभर पानी ले आये। एक प्यासा दीखा तो उसको दे दिया! फिर पंड्याजी को उसे पानी देते देख दूसरा कहता है—मुझे? तो पंड्याजी कहते हैं, अरे, जरा ठहर—मैं उदयपुर जा कर पानी ले आता हूँ। पंड्याजी फिर उदयपुर गये और पानी लाकर दूसरे प्यासे को दिया। उतने में तीसरा आता है—उसके लिए भी उदयपुर से पानी ला कर देते हैं। फिर चौथा आता है वह कहता है—अरे, मुझे भी पानी चाहिए। पंड्याजी कहते हैं—अरे, ठहर, मैं उदयपुर जाऊँगा वहाँ किसी श्रीमान् को कहूँगा तो वह कुआँ बनवायेगा तब लाऊँगा। इसलिए प्यासे को पानी कब मिलेगा? तब जब चारों ओर बारीश होगी। तो यह ग्रामदान की बारीश जब होगी तब पंड्याजी को समाधान होगा कि अब? अभी तक तो पंड्याजी ने इधर-उधर से लोटाभर पानी ला-लाकर पिलाने का काम किया।

देश स्वराज्य के बाद ग्राम स्वराज्य

आज स्वराज्य आया, लेकिन वह कहाँ है? वह दिल्ली और जयपुर में है। स्वराज्य पहले इंगलैण्ड में था, अब वह नजदीक आया है। लेकिन इस गाँव में नहीं आया है।

प्यासे को पानी की जरूरत है। और ५०० मील पर पानी आया। प्यासा क्या कहेगा? ठीक, पानी नजदीक तो आया, लेकिन मैं प्यासा हूँ और प्यास से मेरे गले को तकलीफ हो रही है। तो कहते हैं, देखो अब पानी ३०० मील पर आया। पहले ५०० मील पर था, अब ३०० मील पर आया है। लेकिन वह किस काम का? अब दिल्ली-जयपुर का पानी नहीं चलेगा, पानी तो यहाँ गाँव में चाहिए। तब प्यास बुझेगी। इसलिए हर गाँव में ग्राम स्वराज्य होना चाहिए। और यह ग्रामदान से होगा। अपने कपड़े हम बनायेंगे। अपने हाथ से बनाए हुए कपड़े हम पहनेंगे। ये बहनें कात सकती हैं। ग्राम में यह एक धन्धा होगा। बाहर का कपड़ा पहनते हैं और बाहर से कपड़ा नहीं

www.vinoba.in

मिला तो क्या करेंगे ? फटा-जर्जर कपड़ा हम पहनेंगे यह तो गुलामी है तुलसीदासजी ने सुनाया है :—

" पराधीन, सपनेहु सुख नाही !"

जो पराधीन रहेगा, उसे सपने में भी सुख नहीं मिलेगा। जिसको तेल, गुड़, कपड़ा आदि बाहर से लाना पड़ता है, वे पराधीन हैं उन्हें सपने में भी सुख नहीं मिलेगा। इसलिए हमें खुद को तेल, गुड़, कपड़ा बनाना होगा! अपने लिए मकान बनाने होंगे। अपने लिये अपने हाथों से मिट्टी के बरतन बनाने होंगे। इस सबका आधार है ग्रामदान। फिर कोई भेद नहीं रहेगा। सब सुखी होंगे !

"पराधीन, सपनेहु सुख नाही।" (यह चरण सभा में उपस्थित सब लोगों से बाबा ने १०-१५ बार कहलवाया, फिर कहा :) यह आपको अब पाठ हो गया ! अब गाँव-गाँव जाकर सब लोगों को यही बात बताओ !

◆◆◆

प्रार्थना : प्रवचन

पडाव : परतापपुर (राज:)२०-१-५९

तालीम और सेवक

[सभा में हल्ला होने पर लोगों को शान्त करके व्यवस्थित रूप से सभा का संचालन करना अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है। इस तरह की अशान्ति कई बार अत्यधिक भीड़ होने पर हो जाती है : आज भी इसी तरह की अशान्ति सभा में हो गई। लोग विनोबा का भाषण सुन ही नहीं पा रहे थे। न बोलने में भी विनोबा को आनंद आ रहा था। तब विनोबा ने सभा शान्त करने का एक मनोरंजक तरीका अपनाया। वे अपने शिर पर सर्वोदय-पात्र रखकर गीत गाने लगे : सं०]

नहीं रे बिसारू हरि, अंतरयामी नहीं रे बिसारू हरि,
आवता ने जाता मारग वच्चे, सिर पर मटकी धरी,
अंतरयामी नहीं रे बिसारु हरि,

यह सर्वोदय-पात्र है। यह पात्र हर घर में होना चाहिए। इसमें रोज एक मुट्ठीभर अनाज डालना चाहिए। कहो बच्चो, इसमें अनाज कब डालोगे ? सुबह डालोगे, या शाम को ? दोपहर में खाने के पहले ? सुबह नहा-धोकर के एक मुट्ठी अनाज इसमें डाल देना 'अब तुम समझ गये।' यह सर्वोदय-पात्र यहाँ पर जितनी बहनें हैं, उतने घरों में होना चाहिए। यह सबको सेवा के लिए है। इसके कारण बाँसवाड़ा में सेवक लोग घर-घर जायेंगे और आप सबकी सेवा करेंगे।

यह तालीम !

इन भीलों में से हमें सेवक मिलने चाहिए। आज सरकार क्या करती है ? जो मैट्रिक पास है, उसी को नौकरी देती है। लेकिन हमारे सेवकों के लिए इसकी कोई जरूरत नहीं है ? जो मेहनत कर सकता है, घर-घर जाकर लोगों की सेवा कर सकता है, वह हमारा सेवक बन सकता है। सेवक के लिए मैट्रिक आदि की कोई आवश्यकता नहीं है। आज जो तालीम दी जाती है, उसके लिए तोबा-तोबा है। क्योंकि जिन्होंने तालीम पायी, उन्होंने अकल खोई। यह तालीम पानेवाले भी कैसे हैं ? अपने हाथ से लोटा तक उठायेंगे नहीं। चक्की पीसेंगे नहीं, पानी भरेंगे नहीं, जमीन खोदेंगे नहीं, पसीना बहायेंगे नहीं। लेकिन खाने के लिए तैयार हो जायेंगे। यह तालीम किस काम की ? दिन भर काम करना चाहिए। सूत कातना, बुनना, बढ़ई काम, लुहार काम करना चाहिए। प्रति दिन शाम को रामायण की कहानी, महाभारत की कहानी, भागवत, सन्तों की कहानी, दुनियाँ की खबरें आदि सुनना चाहिए। भजन करना चाहिए। सुबह बच्चों को एक घंटा लिखना-पढ़ना सीखाना चाहिए। फिर वे दिन भर काम करें। इससे लड़के मजबूत बनेंगे।

सुबह हम आते समय रास्ते में एक जगह ठहरे थे। वहाँ पर काफी लड़के थे। हमने उनसे पूछा कि कहो बच्चों ! तुम कितने मील चल सकते हो ? कोई पाँच मील, कोई दस मील, कोई पन्द्रह मील, कोई बीस मील और कोई पच्चीस मील भी चल सकने का कहने लगा। क्या वे लड़के यहाँ आये हैं ? (आवाज आई। जी) वे सब हाथ उठायें। (कई लड़कों ने अपने हाथ ऊपर उठाये) बहुत लड़के आये हैं। बहुत खुशी की बात है। हमने बच्चों से कहा था कि मोटर में नहीं बैठना चाहिए। मोटर के जो पैसे बचेंगे, उसके लड्डू खाने चाहिए। यहाँ से बासवाड़ा जाने के लिए १ रुपया, १। रुपया किराया लगता है। उतना पैसा बचेगा। उसके लड्डू खाइये। पैदल चलने की तालीम चाहिए। अन्यथा ये लोग आज की तालीम पा जायेंगे तो फिर पैदल नहीं चल सकेंगे। चलते-चलते थकान आये तो सवारी चाहिए ? ज्यादह चलना हो तो ठीक है। पर ५-१० मीलों के लिए मोटर क्यों चाहिए ?

मेहनती-सेवक

हमें ऐसे सेवक चाहिए जो अपने पैरों से चलेंगे, हाथों से काम करेंगे। और मेहनत-मशक्कत से नहीं डरेंगे। उनके लिए यह सर्वोदय पात्र रहेगा। अब जो लोग अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखेंगे, वे हाथ उठायें। बहुत अच्छा है, बहुत सारे लोगों ने हाथ उठाया है। और बहनों की तरफ से ? (सब बहनों ने हाथ उठाया) अब यहाँ के हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जायगा।

सेवक हर घर के साथ परिचय करेगा। भूमिदान माँगेगा। भूमिहीनों में भूमि वितरित करेगा, ग्रामदान की बात बतायेगा, चरखा सिखायेगा, गीता पढ़ायेगा, इस तरह की सेवा से ही हम सही तालीम दे सकेंगे।

◆◆◆

अनुक्रम

१. राजस्थान 'वीरभूमि' का···	सीमल बाड़ा	१५ जनवरी	पृ० १०५
२. हरिजन सेवा की नई दिशा···	बालम	२९ दिसम्बर	,, १०८
३. ग्राम ही गाँव को···	लिखितिया	१३ जनवरी	,, ११०
४. तालीम और सेवक···	परतातपुर	२० जनवरी	,, ११२

◆◆◆

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

फोन: १२८५ www.vinoba.in तार—प्रकाशन, राजघाट, काशी।